Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 3

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग
आरंभिक समाज (600 ई.पू.-600 ई.)

भाग - 1

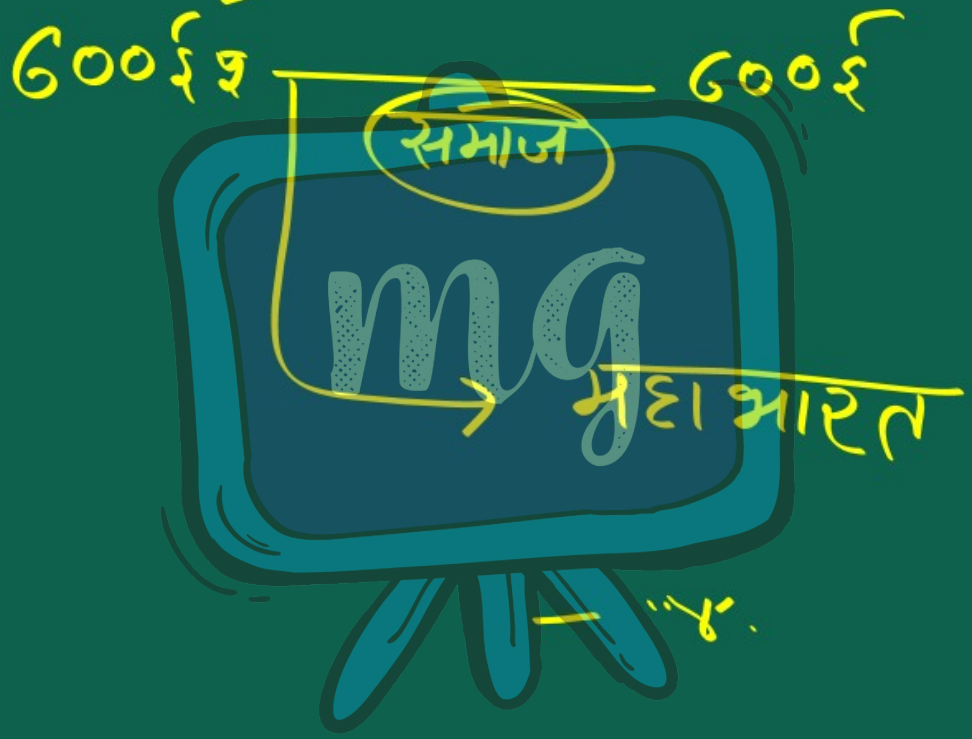
आरम्भिक समाज की स्थिति

प्रीतेश जोशी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

बहुत जाति वर्ग



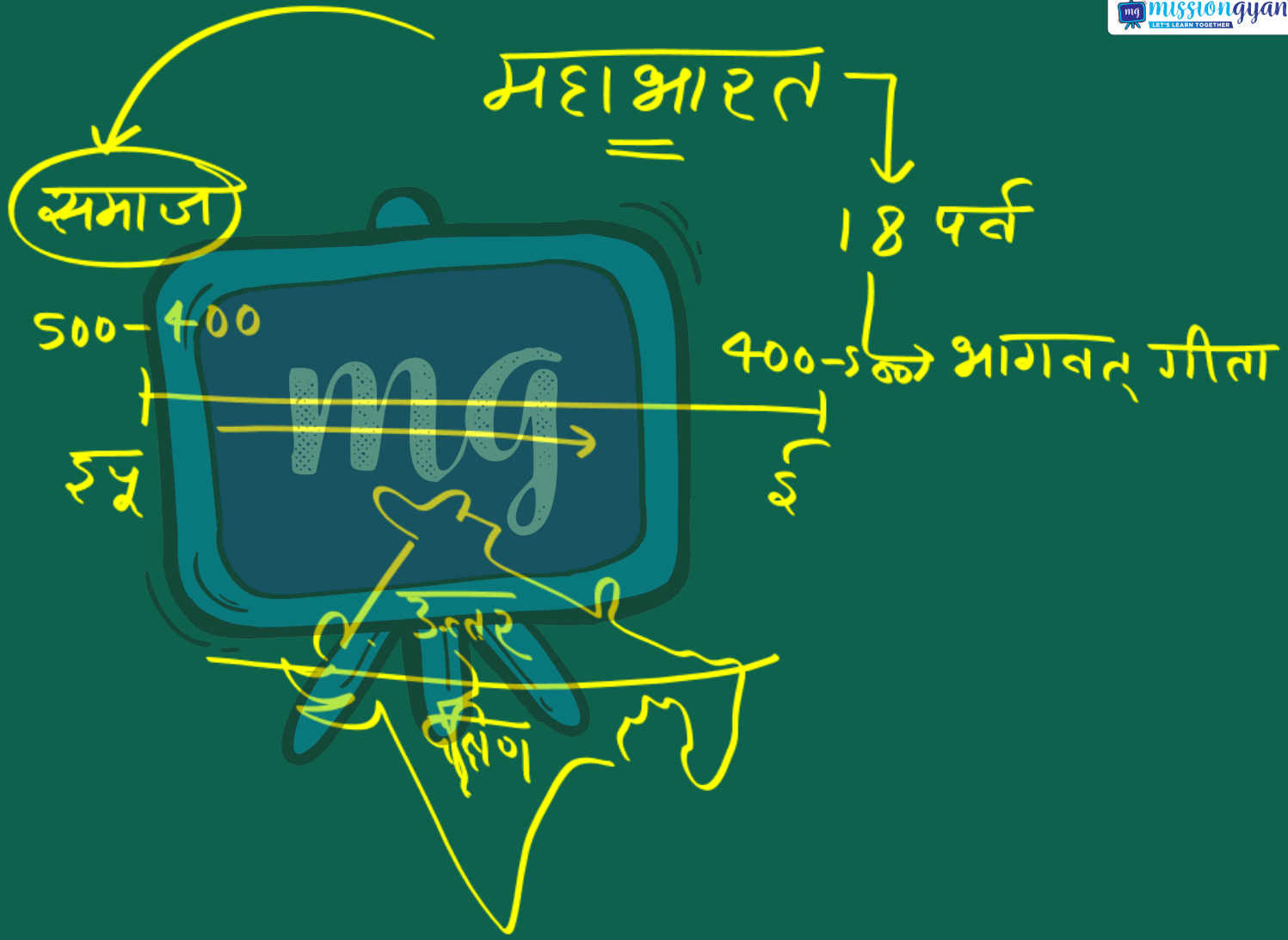
ઉંચ

ઉંચ

મુદ્દા ભારત

Under CSR Support by ipca | Foundation

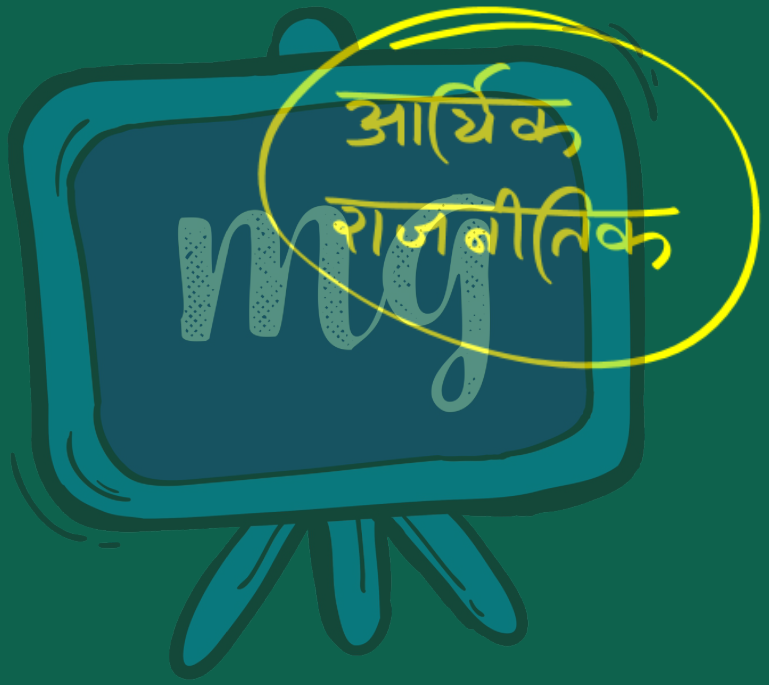
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

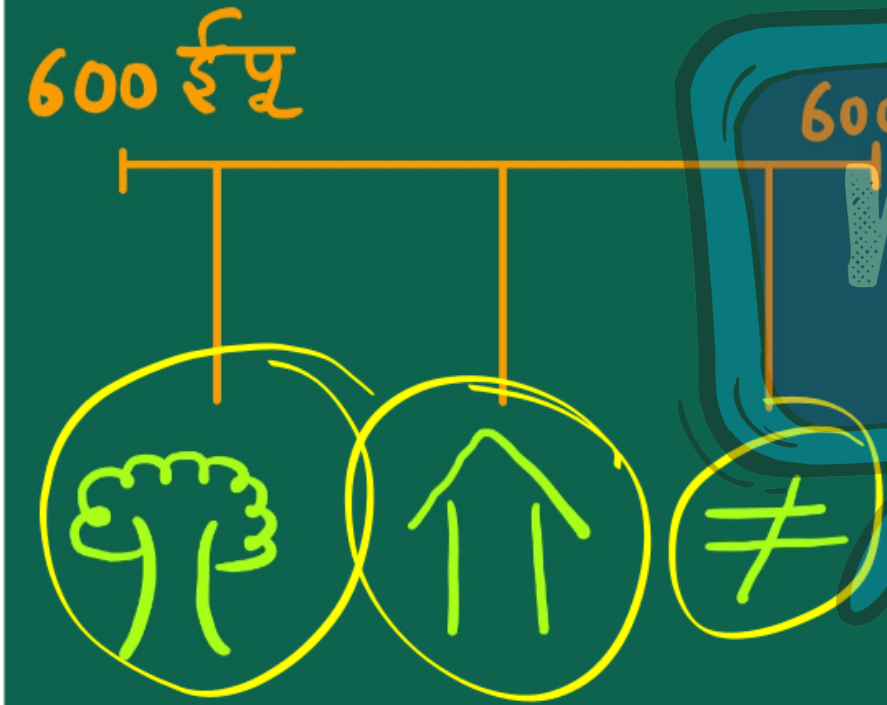
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

600ई पू ⟶ 600ई



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



आरम्भिक समाज की स्थिति –

600 ई.पू. से 600 ईसवी तक आर्थिक और राजनीतिक जीवन में अनेक परिवर्तन हुए। इनमें से कुछ परिवर्तनों ने समकालीन समाज पर अपना प्रभाव छोड़ा।

जैसे –

(i) वन क्षेत्रों में कृषि का विस्तार हुआ जिससे लोगों की जीवनशैली में परिवर्तन हुआ।

(ii) शिल्प विशेषज्ञों के एक सामाजिक समूह का उदय हुआ।

(iii) संपत्ति के असमान वितरण ने सामाजिक विषमताओं को अधिक प्रखर बनाया। (बड़े जमींदार, किसान व श्रमिक वर्ग बनें)।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

इतिहासकार

ग्रंथ

- सामाजिक व्यवहार
- सामाजिक मापदंड

- सामाज का चित्रण

- इतिहासकार इन सब प्रक्रियाओं को समझने के लिए साहित्यिक परंपराओं का उपयोग करते हैं।
- कुछ ग्रंथ सामाजिक व्यवहार के मानदंड तय करते थे तथा अन्य ग्रंथ समाज का चित्रण करते थे और समाज में मौजूद रिवाजों पर अपनी टिप्पणी भी प्रस्तुत करते थे।
- अभिलेखों से हमें समाज के कुछ ऐतिहासिक अभिनायकों की झलक मिलती है। जैसे – असोक, रूद्रदमन।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



- किसने ?
- क्या ?
- क्यों ?
- भाषा ?
- प्रचार ?

रिवाज

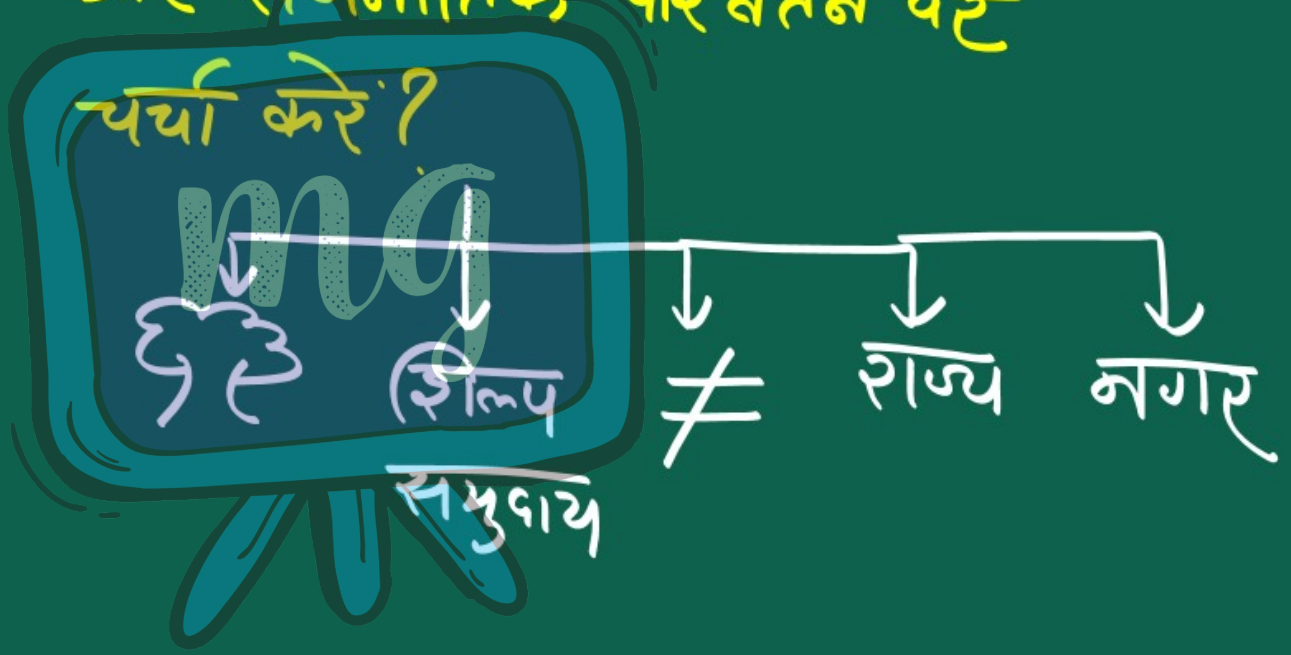
- प्रत्येक ग्रंथ (और अभिलेख) किसी समुदाय विशेष के दृष्टिकोण से लिखा जाता था।
- यह ध्यान रखना जरूरी था कि ये ग्रंथ किसने लिखे, क्या लिखा गया और किसके लिए इनकी रचना हुई। किस भाषा का प्रयोग हुआ तथा इनका प्रचार-प्रसार किस तरह हुआ।
- यदि इन ग्रंथों का प्रयोग सावधानी से करें तो समाज में प्रचलित आचार-व्यवहार और रिवाजों का इतिहास लिखा जा सकता है।

इतिहास

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. 600 ई.पू. से 600 ई. तक हुए आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन पर चर्चा करें?



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

Q. किसी भी ऐतिहासिक ग्रंथ (पौराणिक) को पढ़ने से पहले किन चीज़ो का ध्यान रखना चाहिए ?



① क्यों
② कब
③ कैसे
④ किसके
⑤ भाषा
⑥ प्रचार
⑦ शैली

शैली → इतिहास

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

महाभारत का विश्लेषण

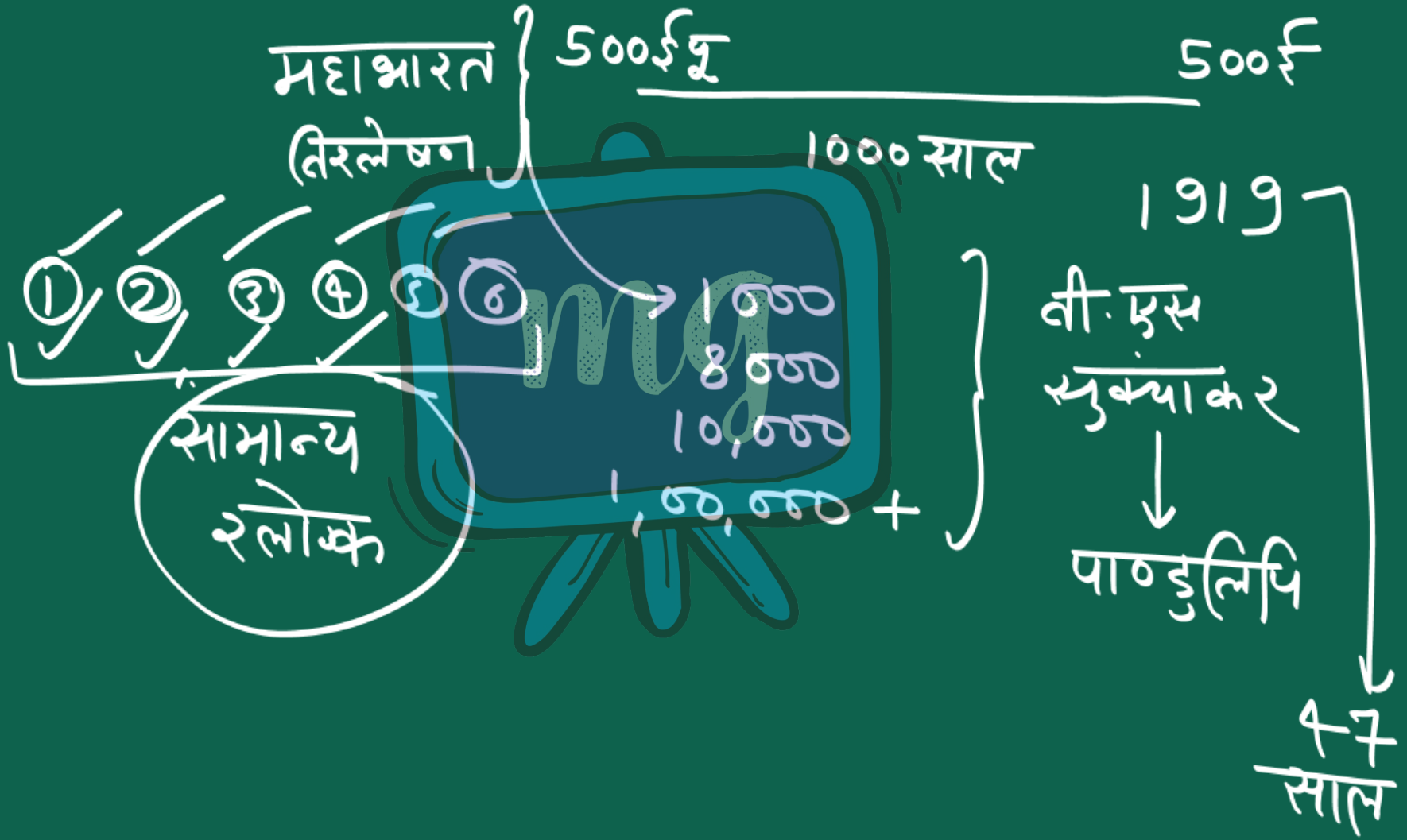
- उपमहाद्वीप के सबसे समृद्ध ग्रंथों में से एक है।



महाभारत का एक दृश्य, मृणमयी मूर्तिकला
(पश्चिम बंगाल) (लगभग 17वीं शताब्दी)

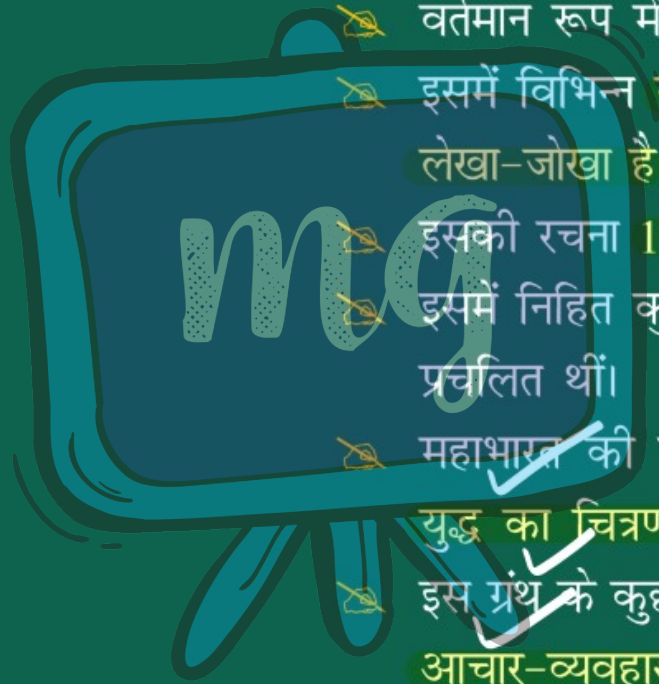
Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by ipca | Foundation

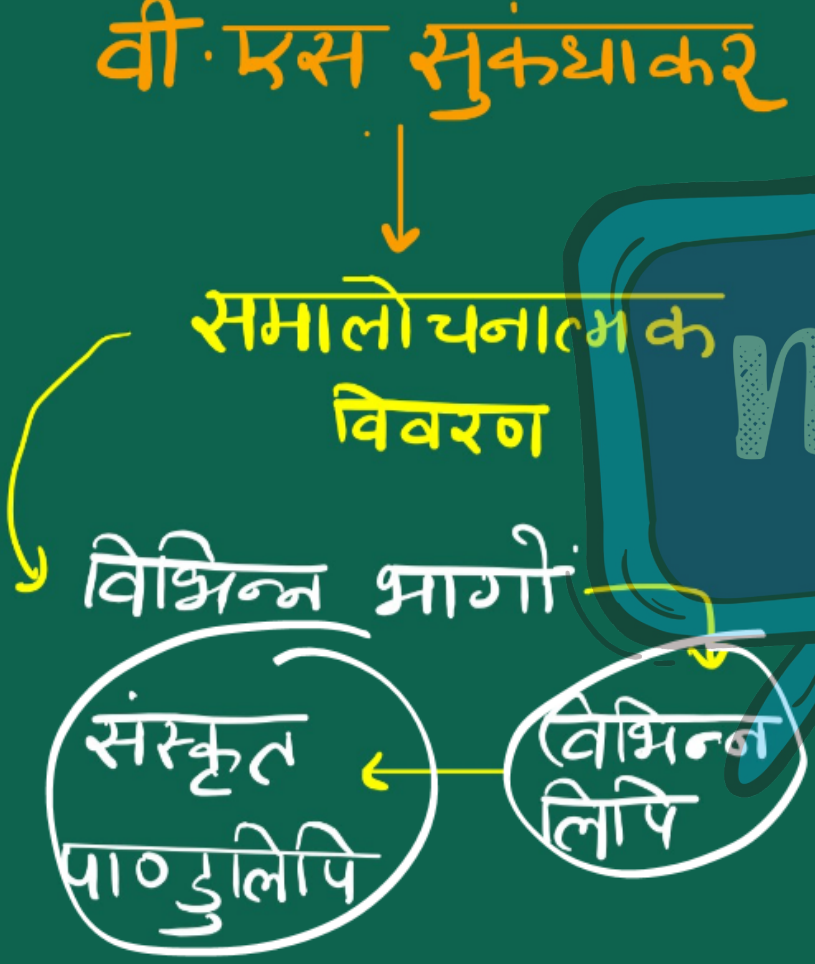
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



- वर्तमान रूप में 1 लाख श्लोकों से अधिक है।
- इसमें विभिन्न सामाजिक श्रेणियों व परिस्थितियों का लेखा-जोखा है।
- इसकी रचना 1000 वर्ष (500 ई. पू. से) होती रही।
- इसमें निहित कुछ कथाएँ जो इस काल से पहले भी प्रचलित थीं।
- महाभारत की मुख्य कथा दो परिवारों के बीच हुए युद्ध का चित्रण है।
- इस ग्रंथ के कुछ भाग विभिन्न सामाजिक समुदायों के आचार-व्यवहार के मानदंड तय करते हैं।
- यदा-कदा इस ग्रंथ के मुख्य पात्र इन सामाजिक मानदंडों का अनुसरण करते हुए दिखाई पड़ते हैं।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



महाभारत का समालोचनात्मक विवरण

1919 में प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान वी.एस. सुकथांकर के नेतृत्व में महाभारत का समालोचनात्मक संस्करण तैयार करने की एक महत्वाकांक्षी परियोजना की शुरूआत हुई। जिसमें अनेक विद्वान शामिल थे। प्रारम्भ में देश के विभिन्न भागों से विभिन्न लिपियों में लिखी गई महाभारत की संस्कृत पांडुलिपियों को एकत्रित किया गया।

उन्होंने सभी पांडुलिपियों में पाये जाने वाले श्लोकों की तुलना करने का एक तरीका ढूंढा।

उन्होंने उन श्लोकों का चयन किया जो लगभग सभी पांडुलिपियों में पाए गए थे और उनका प्रकाशन 13,000 पृष्ठों में फैले अनेक ग्रंथ खंडों में किया।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

सामान्य श्लोकों =

↓

एकत्र

↓

13000 पृष्ठों



- इस परियोजना को पूरा करने में 47 वर्ष लगे।
- इस पूरी प्रक्रिया में दो बातें विशेष रूप से उभर कर आई

पहली – संस्कृत के कई पाठों के अनेक अंशों में समानता थी। अत: स्पष्ट है कि समूचे उपमहाद्वीप में उत्तर में कश्मीर व नेपाल से लेकर दक्षिण में केरल और तमिलनाडु तक सभी पांडुलिपियों में यह समानता देखने में आई।

दूसरी – यह थी कि कुछ शताब्दियों के दौरान हुए महाभारत के प्रेषण में अनेक क्षेत्रीय प्रभेद भी उभर कर सामने आए।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER





- इन प्रभेदों का संकलन मुख्य पाठ की पादटिप्पणियों और परिशिष्टों के रूप में किया गया।
- 13000 पृष्ठों में से आधे से अधिक इन प्रभेदों का ब्यौरा देते हैं।
- ये प्रभेद उन गूढ़ प्रक्रियाओं के द्योतक हैं जिन्होंने प्रभावशाली परंपराओं और लचीले स्थानीय विचार और आचरण के बीच संवाद कायम करके (नये) सामाजिक इतिहासों को रूप दिया था।
- यह संवाद द्वंद्व (दो प्रकार के मत) और मतैक्य (एक ही मत) दोनों को ही चित्रित करते हैं।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



- हमारी समझ मुख्यत: उन ग्रंथों पर आधारित है जो ब्राह्मणों द्वारा उन्हीं के लिए लिखे गए।
- 19वीं और 20वीं शताब्दी में इतिहासकारों ने पहली बार इन ग्रंथों को सतही तौर पर समझा।
- उनका विश्वास था कि इन ग्रंथों में जो लिखा गया है वास्तव में उसी प्रकार से उसे व्यवहार में लाया जाता होगा।
- कालांतर में विद्वानों ने पालि, प्राकृत और तमिल ग्रंथों के माध्यम से अन्य परंपराओं का अधययन किया।
- इन अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ कि आदर्शमूलक संस्कृत ग्रंथ अधिकारिक होते हुए भी प्रश्नवाचक दृष्टि से देखे जाते थे। और यदा-कदा इनकी अवहेलना भी की जाती थी।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

बंधुता एवं विवाह

अनेक नियम और व्यवहार की विभिन्नता

परिवार के बारे में जानकारी :-

संस्कृत ग्रंथों के अनुसार

कुल शब्द → परिवार के लिए

जाति → बांधकों के बड़े समूह के लिए

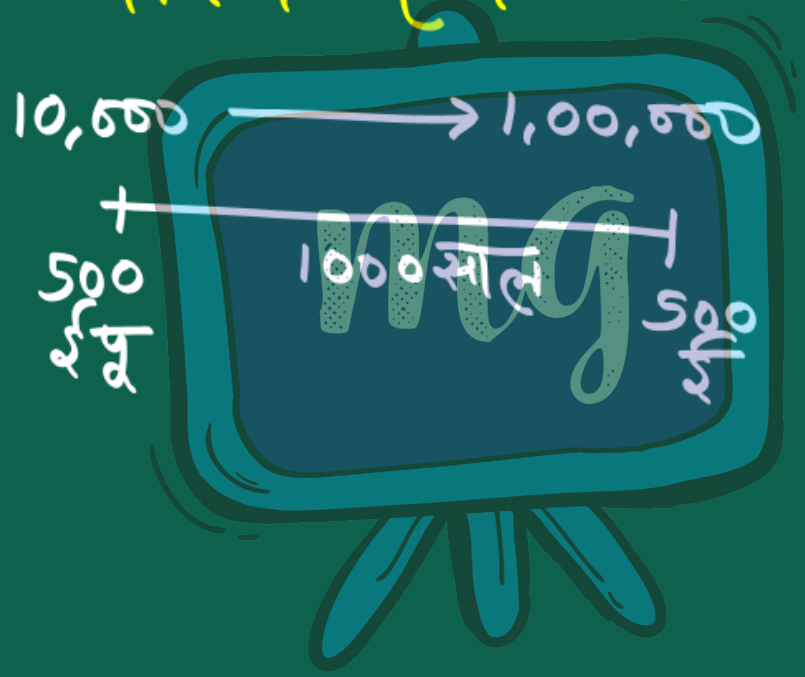
वंश → पीढ़ी दर पीढ़ी एक ही कुल के पूर्वज इक्ट्ठे रूप में एक ही वंश के माने जाते हैं।

- परिवार एक बड़े समूह का हिस्सा होते हैं जिन्हें हम संबंधी कहते हैं।
- कई बार एक ही परिवार के लोग भोजन और अन्य संसाधनों का आपस में मिल बांटकर इस्तेमाल करते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

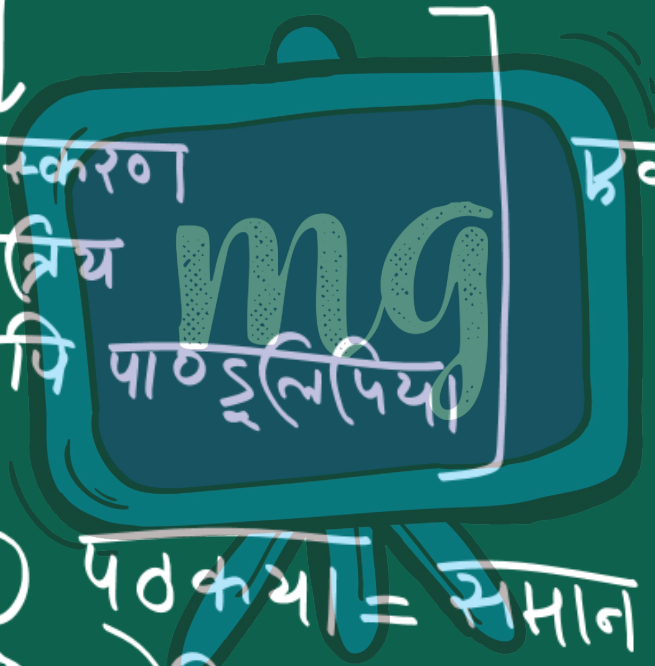
Q. महाभारत का समलोचनात्मक विवरण किस प्रकार किया गया ?



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

वी. एस → परियोजना (1919 — 1966) 47 साल



- ★ अस्करण
- ★ क्षेत्रिय
- ★ लिपि पा० ड्रलिपिया

अक्षरित ⟹ सामान्य श्लोक 13,000

① पठकया। = समान

② क्षेत्रिय ≠ समेद्